प्रारम्भ

वर्ष-21, अंक : जनवरी 2017, मार्च 2018

सिकोईडिकोन परिवार की पत्रिका

पंचम नदी महोत्सव
5th RIVER FESTIVAL

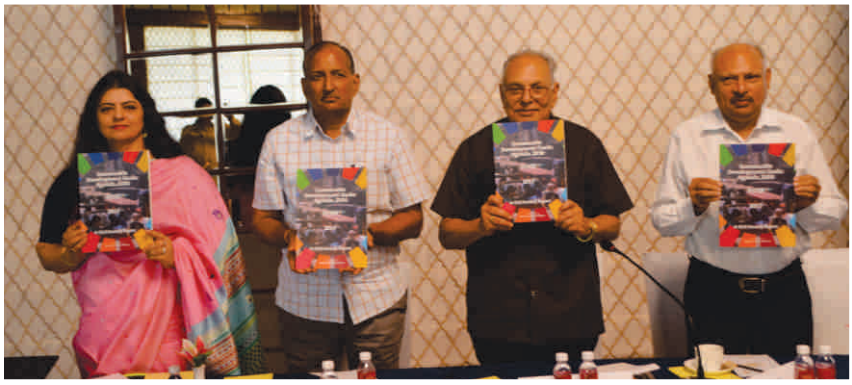

CSR PROJECT-SRIJAN-VI
Activity : Eye Screening Camp
Village :
Date :

महिला पंच- सरपंच संगठन बैठक
ब्लॉक - शाहाबाद

जरा विचार करें

तकनीक ने हमारे रोज़मर्रा के ज़ीवन से जुड़ी कई ज़टिलताओं को आसान बनाया है और दुनियाभर की सूचनाओं को हम तक सुलभ करवाया है। लेकिन एक दूसरा पहलू यह भी है कि पिछले कुछ वर्षों में तकनीक के अधिकाधिक उपयोग ने जिस प्रकार की जीवन शैली को बढ़ावा दिया है, उसने हमारे जीवन मूल्यों को कहीं गहरे में प्रभावित किया है। सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने समय की बहुत बचत की है। तकनीक के माध्यम से हम चंद पलों में हजारों किलोमीटर दूर सूचनाओं का आदान–प्रदान कर पाते हैं। मगर यह भी उतना ही सही है कि समय के अभाव में ही हम अपने पड़ौसी, मित्रों व संबंधियों से दूर होते जा रहे हैं। यह एक अज़ीब विरोधाभास हमारे आस–पास की दुनिया में दिखाई पड़ता है।

शांति, साहचर्य, सद्भाव हमारे सांस्कृतिक मूल्य रहे हैं, किंतु ये मूल्य आज भाषणों का हिस्सा मात्र बनकर रह गए है और हमारे ज़ीवन से दूर होते जा रहे हैं। व्यक्ति स्वयं के आगे परिवार, समुदाय व समाज़ तक ज़ीवन को विस्तार न द पाने के लिए समय के अभाव को बड़ी सहज़ता से दोषी ठहरा देता है।

महत्वाकांक्षाओं की ज़िस अंधी दौड़ में हम भाग रहे हैं, वो मूलतः अर्थ केन्द्रित है। हम आने वाली पीढ़ी को इस दौड़ में और तेज़ दौड़ना सिखा रहे हैं। लेकिन इस भाग–दौड़ में हम मन की शांति, रिश्तों की ऊष्मा, प्रकृति से जुड़ाव व स्वास्थ्य जैसी जीवन की महत्वपूर्ण जरूरतों को खोते जा रहे हैं। जरा ठहरकर विचार करें– क्या यह हमारे विकास की सार्थक दिशा है?

आज ऐसी विचार दृष्टि को विकसित करने की आवश्यकता लगती है, जिसमें तकनीकी ज्ञान व जीवन मूल्यों में परस्पर संगति व सामंजस्य हो। ऐसे सामन्जस्य से युक्त जीवनशैली हमें समग्र विकास की ओर बढ़ने में मददगार हो सकती है।

ज़लवायु परिवर्तन पर आयोज़ित वैश्विक सम्मेलन (कॉप-23) में भागीदारी

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रतिवर्ष ज़लवायु परिवर्तन पर आयोजित होने वाला वैश्विक सम्मेलन–कॉप इस वर्ष बॉन में 6 नवम्बर से 18 नवम्बर तक आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में सिकोईडिकोन व बियोंड कॉपनहेगन की ओर से करीब 20 सदस्यों के दल ने भाग लिया। इस दल में जन प्रतिनिधि, पत्रकार, विधि विशेषज्ञ व सामाज़िक कार्यकर्ता शामिल थे। सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन से जुड़े विषयों पर सिकोईडिकोन, बियोंड कॉपनहेगन व पैरवी के संयुक्त तत्वावधान में तीन साइड इवेंट आयोजित हुए। एक साइड इवेंट भारत सरकार के पैवेलियन में आयोजित किया गया, जिसमें केंद्रीय पर्यावरण मंत्री श्री हर्षवर्धन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि भारत का देशज़ व परम्परागत ज्ञान जलवायु परिवर्तन का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सम्मेलन में पेरिस समझौते की पारदर्शिता, विकसित देशों की ज़वाबदेही व वित्तीय संसाधनों की अनुपलब्धता प्रमुखतः चर्चा का विषय रहे।

कमिशन ऑन स्टेट्स ऑफ वुमन (सी एस डब्लू) के 62वें अधिवेश में सिकोईडिकोन की भागीदारी

12 मार्च से 24 मार्च, 2018 तक न्यूयार्क में आयोजित हुए कमीशन ऑन स्टेट्स ऑफ वुमन के 62वें अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन में सिकोईडिकोन, बियोंड कॉपनहेगन व पैरवी संस्था के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अधिवेशन के दौरान संस्था प्रतिनिधियों द्वारा एक साइड इवेंट भी आयोजित किया गया, जिसमें जलवायु परिवर्तन से महिलाओं के जीवन पर पड़ रहे प्रभावों पर गंभीरतापूर्वक चर्चा की गई। इस बैठक में पैरवी संस्था की अध्यक्षा श्रीमती अपर्णा सहाय, सिकोईडिकोन की उपनिदेशिका विभूति जोशी, पूर्व मंत्री, राजस्थान सरकार श्रीमती ऊषा पुनिया सहित छः प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सी एस डब्लू के तहत् ही उच्च स्तरीय बैठक में सिकोईडिकोन की उपनिदेशक विभूति जोशी द्वारा सिविल सोसायटी की ओर से वक्तव्य पढ़ा गया, जिसमें लैंगिक समानता व वैश्विक मंचों पर सिविल सोसायटी की सिमटती भूमिका पर चिंता व्यक्त करते हुए महिलाओं के सशक्तिकरण की पैरवी की गई।

हाई लेवल पॉलिटिकल फ़ोरम में भागीदारी

न्यूयार्क में जुलाई, 2017 को टिकाऊ विकास लक्ष्यों की प्रगति का ऑकलन करने हेतु गठित हाई लेवल पॉलिटिकल फोरम की वार्षिक बैठक में बियोंड कॉपनहेगन, सिकोईडिकोन व पैरवी संस्था के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक के दौरान एशिया पैसेफ़िक रिज़नल सीएसओज़ एंगेज़मेंट मैकेनिज़म के साथ मिलकर एक साईड ईवेंट भी आयोजित किया गया, जिसमें एच एल पी एफ की पारदर्शिता व कार्यप्रणाली से जुड़े मुद्दों पर 15 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष एच एल पी एफ़ की बैठक में करीब भारत सहित 44 राष्ट्रों ने टिकाऊ विकास लक्ष्यों की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया।

एशिया पैसेफ़िक फोरम पर हुई टिकाऊ विकास पर चर्चा

टिकाऊ विकास से जुड़े क्षेत्रिय मुद्दों पर चर्चा–बहस के लिए संचालित नेटवर्क एशिया पैसेफ़िक फोरम ऑन सस्टेनेबल डवलपमेंट की बैठक में सिकोईडिकोन, पैरवी व बियोंडकॉपनहेगन के प्रतिनिधि के रूप में पैरवी संस्था के निदेशक श्री अज़य झा ने भागीदारी की। श्री झा ने बैठक में टिकाऊ विकास लक्ष्यों पर भारत में सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर चल रही प्रक्रियाओं व प्रगति की जानकारी दी। यह बैठक बैंकाक में 28 से 30 मार्च, 2018 तक आयोज़ित हुई।

दिल्ली में कॉप–23 की पूर्व तैयारी बैठक

ज़लवायु परिवर्तन पर होने वाले वैश्विक सम्मेलन कॉप–23 से पूर्व भारत सरकार व सिविल सोसायटी का पक्ष मज़बूती से अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर रखने हेतु तैयारी बैठक प्री कॉप का आयोजन 23 अक्टूबर, 2017 को दिल्ली में हुआ। यह बैठक बियोंड कॉपनहेगन, सिकोईडिकोन व पैरवी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई। बैठक में भारत सरकार के वन, पर्यावरण व ज़लवायु परिवर्तन मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री रवि शंकर प्रसाद ने कॉप–23 में भारत सरकार के पक्ष पर प्रकाश डाला। इस बैठक में ज़लवायु परिवर्तन पर कार्य कर रहे विशेषज्ञों, संस्थाओं व जनसंगठनों ने भागीदारी की।

इसी संदर्भ में एक अन्य बैठक का आयोजन 30 अक्टूबर, 2018 को उन्नत भारत अभियान, पैरवी, सिकोईडिकोन, बियोंड कॉपनहेगन व भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस बैठक में प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के छात्रों को ज़लवायु परिवर्तन से जुड़े वैश्विक समझौतों व उनसे कृषि, पर्यावरण, महिलाओं की आज़ीविका पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी देते हुए युवाओं के तकनीकी ज्ञान व परम्परागत देशज़ ज्ञान के सामंज़स्य से ज़लवायु परिवर्तन के खतरों को कम करने हेतु आह्वान किया गया।

ग्लोबल एन्वायर्नमेंट फैसिलिटी की बैठक में श्री शरद जोशी हुए शामिल

सिकोईडिकोन के सचिव श्री शरद जोशी ग्लोबल एन्वायर्न्मेंट फैसिलिटी कॉउंसिल की वाशिंगटन में आयोजित हुई 53वीं बैठक में शामिल हुए। यह बैठक 27 से 30 नवम्बर, 2017 तक चली जिसमें पर्यावरण से जुड़े विभिन्न वैश्विक मुद्दों पर चर्चा हुई।

खाद्य महोत्सव – 2017

परम्परागत देशज़ खाद्यान्न को प्रोत्साहित करने व खेती–किसानी से जुड़ी विभिन्न चिंताओं पर मिल–बैठकर संवाद करने के उद्देश्य से पिछले तीन वर्षों से आयोजित किए जा रहे है खाद्य महोत्सव का इस वर्ष आयोजन सिकोईडिकोन के शीलकी डूंगरी स्थित कार्यालय परिसर में किया गया। इस आयोजन में स्थानीय भोजन, लोक संस्कृति व प्रासंगिक विषय पर चिंतन प्रमुख आकर्षण का विषय रहा। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश व राजस्थान के किसानों द्वारा स्थानीय बीजों व खाद्यान्नों की प्रदर्शनी लगाई एवं लोक गीतों व नृत्य के माध्यम से लोक संस्कृति का उत्साहपूर्वक प्रस्तुतिकरण दिया। लोक जीवन की सरसता व सहज़ता को दर्शाते हुए महोत्सव में किसान सेवा समिति की सक्रिय भागीदारी व भूमिका रही। कार्यक्रम के दौरान 'देशज़ खाद्यान्न का महत्व' विषय पर संगोष्ठि का आयोजन किया गया, जिसमें देशज़ मोटे अनाज़ व पारम्परिक खेती पर किसान नेता व स्वदेशी जागरण मंच के श्री भागीरथ मल चौधरी और वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता एवं लोकमत के संपादक श्री अशोक माथुर ने अपने उद्‌बोधन में देशज़ खाद्यान्न के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर वरिष्ठ चिकित्सक एवं साहित्यकार डॉ. श्रीगोपाल काबरा ने रासायनिक खेती से होने वाले गंभीर परिणामों से किसानों को अवगत करवाया एवं पारम्परिक ग्रामीण जीवन शैली की वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर रोचक अनुभवों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए।

सिकोईडिकोन के अध्यक्ष जस्टिस वी. एस. दवे ने खाद्य महोत्सव के प्रतिवर्ष उत्साहपूर्वक किए जा रहे आयोजन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी किसानों से आह्वान किया कि उनकी परम्परागत जीवन शैली ही आज जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्या से निज़ात दिलवा सकती है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के छात्रों का भ्रमण –

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के शोध छात्रों के दल ने सिकोईडिकोन के कार्यक्षेत्र त्रिलोकपुरा का भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य ज़लवायु परिवर्तन के कारण किसानों की आज़ीविका पर पड़ रहे प्रभावों व उनके द्वारा इस संकट का सामना करने हेतु किए जा रहे स्थानीय प्रयासों को समझना था। इस भ्रमण के दौरान शोध छात्रों ने किसान सेवा समिति के सदस्यों से भी बातचीत की एवं प्रोद्योगिकी संस्थान द्वारा जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण पर किए जा रहे कार्यों को साझा किया।

नदी महोत्सव में किसान संगठनों ने की भागीदारी

मध्य प्रदेश सरकार व नर्मदा समग्र द्वारा सामूहिक रूप से आयोजित नदी महोत्सव में सिकोईडिकोन व किसान सेवा समिति ने सक्रिय रूप से भागीदारी की। नदी महोत्सव के आयोजन का मुख्य उद्देश्य नदियों के संरक्षण हेतु कार्य कर रहे लोगों, विशेषज्ञों, संस्थाओं, जनसंगठनों व जन प्रतिनिधियों को एक मंच पर एकत्रित कर इस हेतु सामूहिक योजना तैयार करना व नदियों के प्रति अनुराग भाव से कार्य करने हेतु लोगों को प्रेरित करना है।

उल्लेखनीय है कि नर्मदा समग्र के संस्थापक व पूर्व केंद्रिय वन एवं पर्यावरण मंत्री स्व. श्री अनिल माधव दवे प्रत्येक तीन वर्ष में नदी महोत्सव का आयोजन करते आ रहे थे। इस वर्ष नदी महोत्सव मुख्य रूप से सहायक नदियों के किनारे खेती, आज़ीविका, संस्कृति, ज़ैव विविधता को केंद्र में रखकर आयोजित हुआ व इन्हीं विषयों पर समानान्तर सत्रों का आयोजन किया गया। इन समानान्तर सत्रों की रूपरेखा तैयार करने व सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन में सिकोईडिकोन व किसान सेवा समिति ने सक्रिय भागीदारी निभाई। इस कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गड़करी, सुश्री उमा भारती व मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज़ सिंह चौहान सहित विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

ज़लवायु परिवर्तन पर राज्य स्तरीय बैठक

सिकोईडिकोन व टाटा ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में ज़लवायु परिवर्तन पर राज्य स्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक का उद्देश्य ज़लवायु परिवर्तन के खतरों व उनके निराकरण के उपायों को चिन्हित करना व सरकार से इस सम्बन्ध में कार्य योजना बनाने हेतु अनुशंसा करना था। बैठक में सिकोईडिकोन के अध्यक्ष श्री वी. एस. दवे ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में जल संरक्षण के पराम्परागत उपयोग व उनके महत्व पर प्रकाश डालते हुए उनके पुररूद्धार हेतु सामूहिक अभियान चलाए जाने का सुझाव दिया।

पर्यावरणविद डॉ. एम. एस. राठौड़ ने तापमान वृद्धि व वर्षा चक्र के बदलाव से होने वाले खेती–किसानी के संकट पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में राजस्थान सरकार के पर्यावरण व वन विभाग, जैव विविधता बोर्ड सहित विभिन्न विभागों के प्रतिनिधि, स्वयंसेवी संगठन, मीडिया प्रतिनिधि, जन संगठन व किसान संगठनों ने

खेती –किसानी के मुद्दों पर संवाद

पिछले कुछ वर्षों से ज़लवायु परिवर्तन, बाज़ार केंद्रित व्यवस्था एवं सरकारी नीतियों तक लघु कृषकों की पहुँच न होने से कृषि क्षेत्र पर पड़ रहे प्रभावों को ध्यान में रखते हुए एक कृषि विमर्श का आयोज़न सिकोईडिकोन के स्वराज़ परिसर में 12 अगस्त, 2017 को किया गया। इस विमर्श में सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ. वंदना शिवा ने उपस्थित किसानों के साथ खेती से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। किसान सेवा समिति व सिकोईडिकोन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में किसानों ने राजस्थान में जी. एम. सरसों को रोकने हेतु चलाए गए अभियान की प्रस्तुति दी। डॉ. वंदना शिवा ने इस अवसर पर किसानों को ज़ैविक खेती अपनाने व देशज़ बीज़ों के सरंक्षण का आह्वान किया।

टिकाऊ विकास लक्ष्यों पर ज़ागरूकता रैली

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित टिकाऊ विकास के सार्वभौमिक लक्ष्यों के प्रति लोगों को ज़ागरूक करने हेतु सिकोईडिकोन के कार्यक्षेत्र निवाई में ज़ागरूकता रैली का आयोज़न किया गया। इस रैली में किसानों, महिलाओं, युवाओं, जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया व स्थानीय लोगों को सतत विकास लक्ष्यों की जानकारी दी।

महिला दिवस का आयोज़न

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) के अवसर पर सिकोईडिकोन के शाखा कार्यालयों पर विभिन्न बैठकों व सभाओं का आयोजन किया गया, जिनमें महिलाओं के आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण पर चर्चा की गई। इस अवसर पर सिकोईडिकोन कार्यकारिणी के सदस्य, स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भागीदारी की एवं टिकाऊ विकास में महिलाओं की सक्रिय भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए।

जापान एम्बेसी व सिकोईडिकोन के मध्य कौशल विकास के लिए साझेदारी

जापान एम्बेसी के माध्यम से जड़ स्तरीय परियोजना के तहत् बॉरा जिले में महिलाओं व युवाओं के लिए कौशल विकास केंद्र की स्थापना हेतु स्वयं सेवी संस्था सिकोईडिकोन व जापान एम्बेसी के मध्य एक परियोजना पर 19 दिसम्बर, 2017 को नई दिल्ली में हस्ताक्षर किए गए।

इस परियोजना का उद्देश्य कौशल विकास के विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से युवाओं व महिलाओं की आज़ीविका में सुधार लाना है। इस अवसर पर जापान के राज़दूत श्री केंज़ी हिरामत्सु ने अपने उद्‌बोधन में आशा व्यक्त करते हुए कहा कि इस परियोजना के माध्यम से परियोजना क्षेत्र के समुदाय के ज़ीवन में सुधार होगा व भारत और ज़पान के मध्य साझेदारी के संबंध भी मज़बूत होंगे।

सिकोईडिकोन के सचिव श्री शरद जोशी ने जापान एम्बेसी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस परियोजना से सिकोईडिकोन के वंचित व पिछड़े समुदायों के साथ किए जा रहे कार्यों को निश्चित ही गति व ऊर्जा मिलेगी।

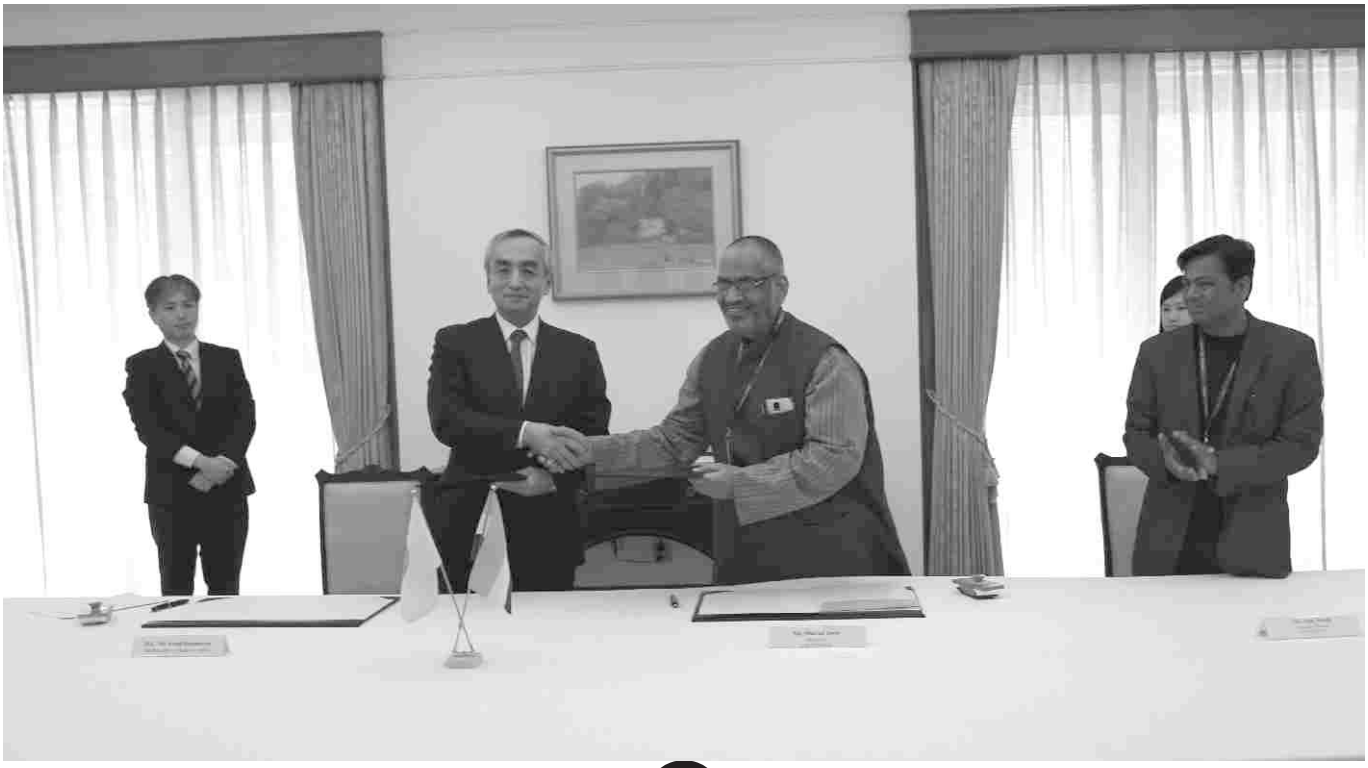

आजीविका सुरक्षा थीम के अन्तर्गत सम्पादित गतिविधियाँ

आजीविका सुरक्षा थीम का मुख्य उद्देश्य समुदाय के लोगों की आजीविकाओं को दीर्घावधि तक सुरक्षित रखना एवं उन्हें आजीविका संवर्धन के विभिन्न उपायों के बारे में जागरूक करना है। आजीविका सुरक्षा थीम के अन्तर्गत जलवायु परिवर्तन की चुनौति से बेहतर तरीके से निपटने के उपायों पर भी कार्य किया गया ताकि लोगों की आजीविका को सुरक्षित रखा जा सके।

वित्तीय वर्ष 2017–18 में आजीविका सुरक्षा थीम के अन्तर्गत सम्पादित की गई गतिविधियों में मुख्य रूप से लोगों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों व कारणों से अवगत कराते हुए उनकी अनुकूलन क्षमताओं को बढ़ाने हेतु कार्य किया गया। साथ ही लोगों को आजीविका संवर्धन के विभिन्न उपायों, सरकारी कार्यक्रमों व योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई। कृषक समुदाय किस प्रकार संगठित होकर कृषक संगठन व कृषक उत्पादक कम्पनी बनाकर कार्य कर सकते हैं, इस संदर्भ में भी प्रयास किये गये।

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बेहतर तरीके से समझने हेतु, जलवायु परिवर्तन का वर्षाजल की उपलब्धता पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस सम्बन्ध में एक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि जलवायु परिवर्तन का वर्षा जल की उपलब्धता पर विशेष प्रभाव पड़ा है एवं पिछले 30 वर्षों के ऑकड़ों के आधार पर यह पाया कि राजस्थान के विभिन्न हिस्सों विशेषकर संस्था के कार्यक्षेत्र में बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है एवं इसका कृषि उत्पादन पर भी असर पड़ा है।

जलवायु परिवर्तन अनुकूलन पर काम करते हुए संस्था ने यह प्रयास किया कि लोग जलवायु परिवर्तन के विभिन्न प्रभावों को समझें, उनका आंकलन करे एवं अनुकूलन हेतु एक कार्य योजना का निर्माण करें। इस हेतु प्राथमिक स्तर पर संस्था के कार्यक्षेत्र के प्रत्येक ब्लॉक से दो पंचायत का चयन कर उनमें जलवायु परिवर्तन के ख़तरों का आंकलन किया गया एवं पंचायत स्तरीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन हेतु कार्य योजना का भी निर्माण किया गया। साथ ही कार्य योजना में निर्धारित किये गये कार्यों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करने हेतु पंचायत स्तरीय जिम्मेदारी भी तय की गई। संस्था ने भी कुछ कार्यों के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

जलवायु परिवर्तन अनुकूलन हेतु सबसे महत्वपूर्ण है कि लोगों को मौसम सम्बन्धी सूचनाएं सतत् रूप से प्राप्त होती रहे। इस हेतु संस्था ने 5 मौसम सूचना संयंत्रों को 5 पंचायतों में स्थापित किया हुआ है। इन संयंत्रों की सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाने हेतु Volunteers भी निर्धारित किये गये हैं। इन Volunteers द्वारा सतत् रूप से पंचायत स्तर पर पंचायत के अधीन सभी गॉवों में मौसम सूचनाओं को नियमित रूप से किसानों तक पहुँचाया गया। जलवायु परिवर्तन पर जागरूकता फैलाने हेतु 2 संभाग स्तरीय कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। यह कार्यशालाएं भीलवाड़ा एवं दौसा में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

ग्राम स्तरीय व ब्लॉक स्तरीय संगठनों (वी. डी. सी. व के. एस. एस.) द्वारा समय–समय पर नरेगा, पी.डी.एस, विभिन्न बीमा योजनाएं, समर्थन मूल्य, खरीद केन्द्रों की उपलब्धता आदि मुद्दों पर मॉनिटरिंग की गई एवं इन सभी के उचित क्रियान्वयन व व्यापक लाभ हेतु प्रयास किये गये।

समुदाय की आजीविका संवर्धन हेतु शाहबाद एवं चाकसू में कृषक उत्पादक संगठन बनाकर उनको एक कम्पनी के रूप में रजिस्टर्ड किया गया। साथ ही कृषक उत्पादक संगठनों के क्षमतावर्धन हेतु विभिन्न प्रशिक्षण आयोजित किये गए। कृषक उत्पादक संगठनों का बिज़नेस प्लान बनाकर उन्हें आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए गए।

आजीविका संवर्धन कार्य–जैसलमेर

राज़स्थान के पश्चिम क्षेत्र जैसलमेर में संस्था विगत 10 वर्ष से कार्यरत है। संस्था द्वारा वर्तमान में 37 गॉवों में सुज़लॉन फाउण्डेशन, सी. एल. पी. इडिया एवं ऑस्ट्रो एनर्जी के सहयोग से कार्य किया जा रहा है। इस क्षेत्र में पशुपालन आज़ीविका का प्रमुख स्त्रोत है। संस्था कार्यक्षेत्र में भेड़, बकरी, एवं गाय पालन बहुतायत से किया जाता है। क्षेत्र में पशु चिकित्सालयों की समुचित व्यवस्था न होने के कारण पशु कई प्रकार के रोगों से ग्रसित होकर उत्पादन कम देते हैं या मर जाते हैं। संस्था द्वारा विभिन्न गॉवों में 83 पशु चिकित्सा एवं टीकाकरण शिविर लगाकर वर्ष 2017–18 में 143642 पशुओं को लाभान्वित किया गया। क्षेत्र में पानी की कमी एवं बरसात के पानी के एकत्रिकरण की पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण गॉवों में पेयजल, मवेशियों एवं अन्य घरेलू कार्यों के लिये पानी की समुचित व्यवस्था न होना ग्रामीण क्षेत्र में प्रमुख समस्या है। इस समस्या के समाधान हेतु टांका निर्माण एवं नाड़ी निर्माण अच्छा समाधान है। संस्था द्वारा 18 टांको का निर्माण परियोजना एवं जन सहयोग से किया गया। पानी संग्रहण हेतु 9 नाड़ी (तालाब) गहरे करवाये गये, जिसमें 11200 घनमीटर क्षेत्र में पानी की बढ़ोत्तरी हुई।

विद्यालयों में ढ़ांचागत सुधार हेतु 13 विद्यालयों में फर्नीचर एवं ख़ेल सामग्री प्रदान की गई, साथ ही विभिन्न अवसरों जैसे बाल दिवस, शिक्षक दिवस, गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस पर विभिन्न गतिविधियों एवं जागरूकता शिविरों का आयोजन कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु प्रेरित किया गया।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता हेतु 5 गॉवों में प्लास्टिक एकत्रिकरण अभियान चलाया गया, वृक्षारोपण के तहत् 1856 पौधे जन सहभागिता से लगवाये गये। दूरस्थ गॉवों में ऑखों की जॉच की व्यवस्था न होने के कारण व्यक्ति विशेषतया वृद्धजन मोतियाबिंद जैसी बीमारी से अपनी ऑखों की रोशनी तक खो देते हैं। संस्था कार्यक्षेत्र के 3 गॉवों में ऑखों की जॉच हेतु शिविरों का आयोज़न किया गया, जिसके तहत् 518 लोगों की जॉच की गई एवं 95 लोगों को मोतियाबिन्द के ऑपरेश हेतु प्रेरित कर जैसलमेर भिजवाया गया एवं सहयोग प्रदान किया गया। परियोजना क्षेत्र में अकृषि क्षेत्र के 2 गॉवों में रोज़गार सृज़न हेतु महिलाओं के सिलाई प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसमें 30 महिलाओं ने दक्षता प्राप्त कर आय संवर्धन प्रारम्भ किया।

बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ

राजस्थान में यू एन एफ पी ए के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा वर्ष 2015 से सवाई माधोपुर व जुलाई, 2016 से टोंक, दौसा व करौली जिले में बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ योजना का शुभारम्भ किया गया। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम में सामूहिक भागीदारी अपेक्षित है। इस कार्यक्रम के माध्यम से बेटियों के प्रति समाज की सोच में बदलाव लाने के लिए स्थानीय जन, पंचायत प्रतिनिधि, जन संगठन व संस्थाएं, सरकारी विभागों, विधि विशेषज्ञ और मीडिया सब साथ जुटेंगे व सहयोग करेंगे तभी बदलाव की बात बन सकती है। सबको जोड़ने की इसी सोच के साथ यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया । इस हेतु नई टीम बनी, सरकारी विभागों से सम्पर्क बने, पंचायतों व तहसीलों को चिन्हित किया गया और सरकारी विभागों व पंचायतों के सहयोग से आवश्यक तथ्य जुटाए गए। संस्था द्वारा इस परियोजना में दिसम्बर 2017 तक कार्य किया गया।

इस कार्यक्रम के तहत विभिन्न कार्यशालाएं व प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें बीबीबीपी पर 124 ज्यूडिशरी अधिकारियों व वकीलों का अमुखीकरण किया गया, 203 बीबीबीपी मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षित किये गये। सरकारी विभाग से 206 आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, 343 साथिनों व 257 आशा सहयोनीयों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण आयोजित कर 127 संन्दर्भ व्यक्ति बनाये गये जिन्होंने चारों जिलों में किशोरी पाठ्यक्रम पर अन्य लोगों को प्रशिक्षण दिया। चारों जिलों में ग्राम पंचायत स्तर पर कुल 200 किशोरीयों के समूह बनाये गये, इन समूहों से 6224 किशोरियों को जोड़ा गया तथा उन्हें किशोरी पाठ्यक्रम पर प्रशिक्षण दिया गया। ये प्रशिक्षण ग्राम पंचायत स्तर पर इन्हीं किशोरियों में से तैयार सखी–सहेली द्वारा दिया गया। चारों जिलों में कुल 600 सखी–सहेली बनाई गयी।

इसके अलावा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के तहत अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों का अयोजन किया जिनके द्वारा अमजन तक बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का संदेश दिया गया। संस्था द्वारा मेले, रैलियों व अमृता हॉट के द्वारा लगभग 6,56,400 लोगों को इस योजना के बारे में बताया गया। जागरूकता अभियान के तहत नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया जिनके द्वारा 200 ग्राम पंचायतों में लगभग 1,54,320 लोगों तक इस कार्यक्रम का उद्देश्य व संदेश पहुंचाया गया। इन्हीं के साथ साथ गैर सरकारी संगठन के प्रतिनिधियों व पंचायत प्रतिनिधियों के साथ बैठकें, वीएचएनसी बैठकें, समुदाय के साथ बैठकों का अयोजन किया गया। महिला दिवस, बाल दिवस व अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन किया गया, बेटी जन्मोत्सव मनाया गया जिससे समुदाय में बेटीयों के प्रति प्यार व सम्मान की भावना पैदा की जा सके। ग्राम पंचायत स्तर पर किशोरी स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया गया तथा युवा दिवस पर युवाओं को इस मुद्दे पर जागरूक किया गया।

''अल्पसंख्यक महिलाओं में सशक्तिकरण की नई रोशनी''

टोंक शहर में लगभग 60 प्रतिशत मुस्लिम अल्पसंख्यक आबादी है। शिक्षा एवं रोजगार का स्तर काफी नीचे है। अधिकांश महिलायें बीडी बनाने का कार्य करती हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। पुरूष रिक्शा, ठेला चलाने का कार्य करते हैं।

अल्पसंख्यक मंत्रालय के सहयोग से सिकोईडिकोन संस्था द्वारा टोंक शहर में संचालित परियोजना ''नई रोशनी'' अल्पसंख्यक महिला नेतृत्व विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य – अल्पसंख्यक महिलाओं को सशक्त बनाना, उनका आत्म विश्वास बढाना एवं योजनाओं की जानकारी देकर सतत्विकास में भागीदार बनाना है।

इस 6 दिवसीय प्रशिक्षण में महिला सशक्तिकरण, स्वच्छ भारत अभियान, सरकारी योजनाओं के बारे में जनकारी एवं बालिका शिक्षा को बढावा देने के लिए जागरूक करना, सामाजिक एवं व्यवहारगत परिवर्तन, शिक्षा का अधिकार, जीवन कौशल, घरेलू हिंसा व महिला उत्पीडन और महिला कानूनों की जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण के बाद महिलायें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हुई है। घरों में बने पाखानों के स्थान पर शौचालय निर्माण एवं उसका उपयोग करने लगे हैं। परिवार नियोजन के साधनों को अपनाने लगी है। कुछ महिलाओं ने अपने घरों में छोटी छोटी दुकाने खोली हैं जिससे आर्थिक स्थिति सुधरने लगी है। अल्पसंख्यक विभाग से लॉन लेकर अपने व्यवसाय को बढा रही हैं। बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ है एवं सरकारी योजनाओं से जुडकर उनका लाभ प्राप्त करने लगी हैं।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर कार्यशाला

अप्रेल, 2016 से लागू की गई प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के क्रियान्वयन में आ रही समस्याओं व इस योजना से जुडी विभिन्न प्रक्रियाओं पर समझ बनाने हेतु 29 मार्च 2018 को सिकोईडिकोन के शिलकी डूंगरी स्थित शाखा कार्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में अतिरिक्त महाधिवक्ता श्री श्याम लदरेचा ने फसल बीमा योजना के विभिन्न चरणों पर विस्तार से अपनी प्रस्तुति दी। इस दौरान किसान सेवा समिति के सदस्यों व अन्य किसानों ने फसल बीमा योजना का लाभ न मिल पाने के विभिन्न अनुभवों को साझा किया और उनकी समस्याओं के निराकरण हेतु प्रक्रिया की जानकारी ली।

ग्लोबल अलाएंस ऑन इम्प्रूव्ड न्यूट्रीशन (GAIN)

ग्लोबल अलाएंस ऑन इम्प्रूव्ड न्यूट्रीशन **(GAIN)** के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा खाद्य तेल और दूध के फोर्टीफिकेशन को प्रोत्साहित करने हेतु एक विशिष्ट परियोजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस परियोजना का उद्देश्य खाद्य तेल और दुग्ध उत्पादक उद्योगों की फोर्टीफिकेशन हेतु क्षमतावर्द्धन करना है। साथ ही यह परियोजना खाद्य नियमन और गुणवत्ता नियंत्रण के क्षमतावर्द्धन हेतु भी कार्य कर रही है। इस परियोजना का कार्यक्षेत्र मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात है।

बाल सुरक्षा हेतु प्रतिबद्ध चाईल्ड लाईन–जैसेलमेर

संस्था सिकोईडिकोन सन् 2011 से राजस्थान के जैसलमेर जिले में बाल सुरक्षा एवं सहयोग हेतु चाइल्ड हैल्पलाइन 1098 का संचालन सुचारू रूप से कर रही है। चाइल्ड लाइन एक 24 घण्टे संचालित आपातकालीन सेवा है। यह भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मन्त्रालय द्वारा संचालित की जाती है, जिसमें चाइल्ड लाइन इण्डिया फान्डेशन केन्द्रिय संस्था के रूप में कार्यरत है।

संस्था जैसलमेर जिले में बच्चों की सुरक्षा एवं देखभाल के मुद्दों पर जिला बाल कल्याण समिति, पुलिस, प्रशासन, शिक्षा विभाग, श्रम विभाग, रेल्वे, चिकित्सा विभाग एवं अन्य विभागों के सहयोग से 24 घण्टे निरन्तर कार्यरत है। वर्ष 2017–18 में चाइल्ड लाइन जैसलमेर में बच्चों की सुरक्षा एवं सहयोग से जुड़े 2245 टेलिफोन काल प्राप्त हुए। संस्था द्वारा 196 प्रकरण दर्ज किये गये, जिसमें दुर्व्यवहार से बचाव हेतु 37, चिकित्सा सहायता हेतु 35, पुर्नघर वापसी से जुड़े हुए 66 (मुद्दे जिनमें से अधिकांशतः अन्य राज्यों से सम्बन्धित), गुमशुदा बच्चे 05, प्रायोजन हेतु 19, आपात हेतु 05, भावनात्मक सहयोग एवं मार्गदर्शन हेतु 13 तथा 26 अन्य प्रकरण दर्ज किये गये एवं उनका उचित निस्तारण करवाया गया।

ब्लू व्हेल गेम से प्रभावित बालिका घर लौटी

आधुनिक समय का खतरनाक खेल ब्लु व्हेल अब गांवों तक भी पहुंच गया है, जिसके जुनून में लोग अपनी जान तक गंवा रहे हैं। रायसेन से महज़ 22 कि.मी. दूर बड़ौडा (म.प्र.) की एक नाबालिग बालिका परिवार की परवाह ना करते हुए घर से लापता हो गई। जानकारी के अनुसार बड़ौदा निवासी बालिका की गुमशुदगी की सूचना थाना कोतवाली व चाईल्ड लाइन रायसेन में 1098 के माध्यम से 2 सितम्बर 2017 को दर्ज हुई। सूचना के आधार पर दिनांक 13 सितम्बर, 2017 को राजस्थान के जैसलमेर जिले की रेल्वे पुलिस को नाबालिग बालिका प्राप्त हुई। चाईल्ड लाइन जैसलमेर की सहायता से बच्ची को रायसेन लाया गया। राज एक्सप्रेस संवाददाता द्वारा जब बालिका से पूछा गया कि वह जैसलमेर कैसे पहुंची? तब बालिका ने बताया "मैं ब्लु व्हेलगेम खेल रही थी गेम खेलते–खेलते सिक्रेट टास्क दिया गया कि तुम अपने मम्मी पापा को कैसे परेशान कर सकती हो। फिर उसमें बताया गया कि तुम अपने घर से भाग जाओ, जिससे तुम्हारे मम्मी पापा बहुत परेशान होंगे। मैं इसी कारण 300 रू. लेकर घर से बिना बताए निकल गई। मैं भोपाल से दिल्ली की ट्रेन में बैठ गई और जैसलमेर के रेल्वे स्टेशन पर पुलिस ने मुझे घूमते हुए देखा तब मुझसे पूछताछ की गई व चाईल्ड लाइन टीम को सूचना दी गई"। चाईल्ड लाइन टीम वहां पहुंची और बच्ची से लगातार बातचीत की गई तब उसने बताया कि वह रायसेन के पास बड़ौदा की रहने वाली है। उसके बाद प्रक्रिया पूर्ण करके बालिका को बाल कल्याण समिति को पेश किया गया फिर बाल कल्याण समिति के आदेशानुसार बाल कल्याण समिति रायसेन को पेश करने का आदेश दिया गया परन्तु रायसने में बाल कल्याण समिति नहीं होने के कारण चाईल्ड लाइन विदिशा को बालिका को सुपुर्द किया गया और बच्ची की एकबार पुनः काउंसलिंग करके माता–पिता को सुपूर्द किया गया।

रायसेन एक्सप्रेस

बड़ोदा की एक नाबालिग परिवार की परवाह न कर घर से लापता हो गई

ब्लू व्हेल गेम से प्रभावित होकर गई गुमशुदा बालिका घर लौटी

CHILD LINE 1098

बदलाव की कहानी – समुदाय की मेहनत से मिला पीने का पानी

सीतारामपुरा गांव टोंक जिले के मालपुरा ब्लॉक में स्थित है। जो मालपुरा से उत्तर पूर्व मे लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव लगभग 100 वर्ष पहले बसा था। शुरूआत में यहां 50 परिवार के लगभग 300 लोग निवास करते थे। वर्तमान में यहां सभी जातियों के 175 परिवार हैं जिनकी आबादी 2000 है। सीतारामपुरा गांव में राजपूत, ब्राहम्ण, मीणा, दरोगा, गुर्जर, महाजन, बैरवा, कुम्हार, धोबी, खाती, नाई एवं मुसलमान जाति के परिवार निवास करते हैं, इनमें सबसे ज्यादा ब्राहामण समाज के 80 प्रतिशत परिवार हैं। गांव की आजिविका पशुपालन व खेती पर ही निर्भर थी। गांव मे उस समय पीने के पानी की बहुत बड़ी समस्या थी, गांव में जो पानी उपलब्ध था वह खारा था। स्वयं के पीने के पानी की व्यवस्था भी बहुत दूर से करनी पड़ती थी या खारे पानी का ही उपयोग किया जाता था। खारे पानी के अधिक उपयोग से लोगों में कई प्रकार की बीमारीयां भी हो जाती थी। ऐसे मे पशुओं के लिए पानी कहां से लायें ये भी इनकी मुख्य समस्या थी। पानी की समस्या कैसे हल हो इस पर सभी ग्रामवासियों ने विचार किया तथा इस नतीजे पर पहुंचे की यदि गांव में एक नाड़ी (तालाब) का निर्माण हो जाये तो पानी की समस्या दूर हो सकती है। सभी को यह सुझाव अच्छा लगा लेकिन साथ ही दूसरी समस्या सामने आयी कि इस कार्य के लिए पैसे कहां से आयेंगे क्योंकि सभी परिवार काफी गरीब थे तथा अन्य कहीं से भी आर्थिक सहायता की उम्मीद नहीं थी। ऐसे में सभी ने तय किया की नाड़ी (तालाब) का निर्माण हम सभी मिलकर करेंगे। तब उन्होंने एक नियम बनाया कि गांव के सभी परिवारों में प्रत्येक सदस्य के नाम की 100 क्विंटल मिट्टी तालाब क्षेत्र से निकाली जायेगी। यह परम्परा आज भी कायम है। ग्रामवासियों ने बताया कि आज तक इस नियम की अवहेलना किसी भी परिवार द्वारा नहीं की गई है। वर्तमान में यह तालाब 70 बीघा के क्षेत्र में फैला हुआ है। ग्रामवासियों ने इस नाड़ी (तालाब) का नाम गुन्दलिया नाड़ी रखा, इस नाम को रखने के पीछे कारण यह है कि इस तालाब में एक घास उगती है जिसे स्थानिय भाषा में गुन्दली कहा जाता है इस घास को भैंस खाती है। अधिक मात्रा में घास पैदा होने के कारण इस नाड़ी (तालाब) का नाम ही गुन्दलीया नाड़ी रख दिया गया।

पशुओं के पीने के पानी का समाधान होने के बाद इन्होंने सोचा की ग्रामवासी खारे पानी का उपयोग कब तक करेंगे तथा इसे पीने से बीमारीयां भी अधिक होती है। तब इन्होंने नाड़ी (तालाब) में ही कुएं के निर्माण का तय किया। इसके लिए इन्होंने प्रति परिवार 1000 रू के हिसाब से राशि इकट्ठा की तथा इस राशी से व स्वयं के श्रमदान से कुए का निर्माण किया गया। इसी तरह कुछ समय बाद इन्हों ने एक कुए का निर्माण और करवाया। एक कुए का निर्माण गांव के ही एक व्यक्ति ने अपने खर्च पर धर्माथ करवाया। इन तीनों कुओं का निर्माण नाड़ी (तालाब) के क्षेत्र में ही करवाया गया है इनमें एक कुआ नाड़ी के अन्दर है व दो कुए नाड़ी के बाहर है। तालाब में अधिक पानी भर जाने पर ये बाहर के कुए से पानी लेते थे तथा गर्मियों में बाहर के कुओं का पानी सूख जाने पर तालाब के अन्दर के कुए से पानी लिया जाता था।

नाड़ी (तालाब) की पाल व कुओं की मरम्मत के कार्य के लिए ग्रामवासी तालाब के पास पशुओं के गोबर व बबुल की लकड़ीयों को बेच कर उससे प्राप्त राशि से करते थे। ये तालाब व कुए गांव से 2 किलोमीटर की दूरी पर है। पीने का पानी महिलाओं द्वारा लाया जाता था तब सभी ने एक साथ बैठकर विचार किया महिलाएं इतनी दूरी से पानी लेकर आती इससे इनका समय व मेहनत भी अधिक लगती है। इस पर सभी ने जलदाय विभाग को तालाब पर स्थित कुआ दिखाया व इस कुए से ही गांव में पानी की सप्लाई की बात रखी। ग्रामवासियों के अथक प्रयास से जलदाय विभाग ने एक कुए में बोरिंग कर पास ही एक बड़ी टंकी का निर्माण करवाया तथा गांव में पानी की सप्लाई शुरू की गई। ग्रामवासियों ने तालाब क्षेत्र को ग्राम पंचायत को सुपुर्द कर दिया है तथा ग्राम पंचायत के बजट से तालाब के पास पक्की

दीवार का निर्माण करवाया गया है। आज भी नाड़ी (तालाब) की देखरेख ग्रामवासी ही करते हैं तथा किसी भी कार्य के लिए ग्राम पंचायत को अवगत करवाते हैं।

सीतारामपुरा गांव के लोगों द्वारा किये गये अथक प्रयास व मेहनत से 2 किलोमीटर दूर के पानी को गांव तक ले आये हैं। आज गांव के प्रत्येक घर में पानी का नल लगा हुआ है, महिलाओं को दूर से पानी नहीं लाना पड़ता है। महिलाओं ने बताया कि उन्होंने 60 वर्षों तक लगातार सर पर पानी ढोया था। गांव में खारे पानी से होने वाली बीमारीयां समाप्त हो गई है, पशुओं के लिए भी अब घर में ही पानी की व्यवस्था हो गई है।

इस नाडी को गहरी करवाने हेतु सस्थां द्वारा सीमावी कार्यक्रम के अर्न्तगत सन 2005–6 मे 2.00 लाख रूपये का कार्य करवाया गया जिसमे 60 प्रतिशत का अंशदान का सहयोग ग्रामिणो द्वारा किया गया। जिसमे नाडी को गहरा करवाने व खेळी मरम्मत हेतु करवाने का कार्य करवाया गया। आज यह वही नाडी है जो एक तालाब का रूप ले लिया तथा खेळी से चरागाह मे चरने आने वाले मवेशी पानी पीते है।

सीतारामपुरा गांव के लोगों ने अपने दम पर पीने के पानी का स्थाई समाधान कर लिया तथा आज वे खुशहाली से जीवन जी रहे हैं।

सहकारी समितियों के नये कार्यालय भवनों का शुभारम्भ

NIWAI KI PHOTO + MALPURA KI PHOTO

''चिराली'' साथ सदा के लिए

महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ होने वाली हिंसा हमारे देश में एवं संपूर्ण विश्व में एक चिन्ता का विषय है। महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा का प्रकार और तरीका अलग–अलग समाज में अलग–अलग हो सकता है, किन्तु कोई भी समाज यह दावा नहीं कर सकता कि वह महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा से मुक्त है। महिलाओं एवं बालिकाओं के विरूद्ध होने वाली हिंसा के विरूद्ध केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रम एवं योजनाए संचालित की जा रही हैं।

महिलाओं और बालिकाओं के प्रति होने वाली हिंसा की रोकथाम में समुदाय आधारित संगठन/समुह प्रभावी भूमिकाएं निभा सकते हैं। यह समूह न केवल हिंसा की घटनाओं को रोकने और पीड़ितों को तत्काल सहायता करने में सहयोगी हो सकते हैं, अपितु समाज में व्याप्त असमानता में बदलाव के लिए भी महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं।

''चिराली'' की संकल्पना एक ऐसे समुदाय आधारित अनौपचारिक संगठन के रूप में की गई है जो महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति होने वाली हिंसा की रोकथाम हेतु प्रतिबद्ध रहेगा। सरकारी व गैर सरकारी सदस्यों के रूप में यह संगठन समाज़ के प्रत्येक वर्ग को अपने साथ जोड़ेगा। 'चिराली' के अन्तर्गत ग्राम स्तर पर उपसमूह व ग्राम पंचायत स्तर पर मुख्य समूह गठित किये जायेगें। योजना के क्रियान्वयन में संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) तकनीकी सहयोग प्रदान करेगा। राज्य के 7 जिलों यथा बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, बूंदी, जालौर, झालावाड़, नागौर तथा प्रतापगढ़ में सामुदायिक कार्य दलों का गठन कर योजना को क्रियान्वित किया जाना है। इन कार्यदलों को ''चिराली'' के नाम से जाना जायेगा।

उद्देश्य

1. बालिकाओं एवं महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा, भेदभाव एवं लिंग भेदभाव से जुड़े विषयों के प्रति समुदाय एवं हितधारकों के साथ मिलकर समुदाय को संवेदनशील एवं जागरूक करना।
2. महिलाओं और बालिकाओं के साथ होने वाली जेण्डर आधारित हिंसा को दूर करने के लिए प्राथमिक तौर पर कार्य करना।
3. महिलाओं एवं बालिकाओं के सशक्तिकरण एवं सुरक्षा से संबंधित कानूनों के प्रति समुदाय को संवेदनशील बनाना।
4. महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा के लिए लिंग आधारित भेदभाव और हिंसा को कम करने के लिए विभिन्न हितधारकों को एक मंच उपलब्ध कराना।

5. समुदाय स्तर पर महिलाओं व बालिकाओं के प्रति होने वाली लिंग आधारित भेदभाव व हिंसा के प्रति व्यवस्थित ढ़ॉचे का निर्माण व सुदृढ़ीकरण।
6. महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा व अपराध से सुरक्षा के लिए समेकित रूप से महिला सुरक्षा अंकेक्षण (Security Audit) करना।
7. जेण्डर आधारित हिंसा व भेदभाव से महिलाओं व बालिकाओं की सुरक्षा के लिए विभिन्न कार्यक्रम एवं योजनाओं के बीच समन्वय एवं संयोजन (Convergence and Linkage) को प्रोत्साहित करना।

महिलाओं को सशक्त करती वजूद परियोजना

महिलाओं पर हिंसा के आंकड़ों एवं परिणामों की गम्भीरता को देखते हुए वजूद कार्यक्रम की शुरूआत फरवरी 2017 की गई है। वजूद कार्यक्रम समुदाय आधारित संगठनों के माध्यम से घरेलू हिंसा एवं महिला सशक्तिकरण के प्रति वातावरण निर्माण करते हुए समाज को जागरूक एवं संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया ताकि घरेलू हिंसा व उत्पीड़न से निवारण के लिए उपलब्ध परामर्श एवं कानूनी सेवाओं तक महिलाओं की पहुंच बढ़ सके। परिवार नियोजन में पुरूषों की भागीदारी सुनिश्चित करना परियोजना का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। राजस्थान में 42.5 प्रतिशत महिलाएं नसबन्दी करवाती हैं जबकि इसमें पुरूषों की भागीदारी मात्र 0.2 प्रतिशत है। सिकोईडिकोन राजस्थान के निवाई (टोंक) एवं चाकसू (जयपुर) विकास खण्डों में पॉपुलेशन सर्विसेज़ इन्टरनेशनल के सहयोग से वृहद् स्तर पर जागरूकता लाने का प्रयास कर रहा है तथा स्वयं सहायता समूहों एवं ग्राम विकास समितियों के माध्यम से सामाजिक बदलाव एवं हिंसा से पीड़ित महिलाओं को सहयोग प्रदान किया जा रहा है। हिंसा मुक्त परिवार की सोच को प्रचारित करने तथा बेहतर पारिवारिक सामंजस्य के लिए चाकसू एवं निवाई में परामर्श केन्द्रों की स्थापना की गई है जहां महिलाएं निर्भीक होकर परामर्श एवं सहयोग के लिए जा सकती हैं। वजूद परियोजना महिलाओं के गरिमापूर्ण जीवन की सुनिश्चितता हेतु समुदाय, जनप्रतिनिधियों, प्रशासन एवं स्वयंसेवी संस्थाओं का एक साझा प्रयास है।

परियोजना के अन्तर्गत चाकसू एवं निवाई विकास खण्ड़ों के 500 स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षित किया गया है। इन समूहों की चयनित 4176 महिला नेत्रीयों को जेण्ड़र आधारित हिंसा, उपलब्ध सेवाओं, पीड़ित महिलाओं की आवश्यकताओं एवं समुदाय की मानसिकता में बदलाव लाने हेतु प्रशिक्षित किया गया है। 50 अन्य महिलाओं को परामर्श कौशल पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया ताकि वे घरेलू हिंसा से पीडित महिलाओं के सहायता के लिए अपेक्षित परामर्श कर सकें। परियोजना ना केवल महिलाओं को इस विषय पर प्रशिक्षित कर रही है बल्कि पुरूषों के साथ भी सघन प्रयास किये गये है ताकि उनकी मानसिकता में परिवर्तन लाकर उनके माध्यम से अन्य पुरूषो एवं युवाओं के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकें। इस हेतु 271 पुरूषो को जेण्ड़र से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षित किया गया साथ ही घरेलू हिंसा से पीडित महिलाओं को सहायता उपलब्ध करवाने में उनकी भूमिका भी सुनिश्चित की गई। संस्थागत रूप से स्थानीय स्तर पर ग्राम पंचायतों की महिला विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए 62 ग्राम पंचायतों के 242 जनप्रतिनिधियों का जेण्डर आधारित हिंसा और पंचायतों की भूमिका पर आमुखिकरण किया गया। तत्पश्चात 66 ग्राम पंचायतों में ग्राम सभा एवं अन्य बैठकों के माध्यम से 5107 जन प्रतिनिधियों एवं आमजन को इस मुददें पर जागरूक किया गया। परिवार नियोजन तथा प्रजनन स्वास्थ्य पर जागरूकता एवं पुरूषों की भागीदारी बढाने के लिए 200 गांवो में 5201 पुरूषो तथा 5746 महिलाओं के साथ प्रजनन स्वास्थ्य पर सत्र आयोजित किये गये। स्थानीय प्रशासन को ग्राम स्तरीय विभिन्न गतिविधियों के शामिल किया गया तथा उनके साथ कार्यशाला भी आयोजित की गई। बजूद कार्यक्रम के तहत विभिन्न गतिविधियों में माध्यम से 200000 से ज्यादा महिला एवं पुरूषो को जेण्ड़र आधारित हिंसा, हिंसा से पीड़ित महिलाओं के लिए उपलब्ध सेवाओं तथा प्रजनन स्वास्थ्य पर जागरूक किया जा चुका है। प्रशिक्षित समुदाय आधारित संगठनों एवं ग्राम पंचायत के कार्यकर्ताओं के माध्यम से अब तक 890 घरेलू हिंसा से पीडित महिलाओं की पहचान हो सकी है।

महिलाओं के लिए मिशाल

और उनका मार्गदर्शक बनी।

मंजू वर्मा

स्वरोजगार का प्रयास...

महिला सशक्तिकरण के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पाया पुरस्कार

जलवायु परिवर्तन एवं सतत विकास लक्ष्य पर हुआ चिन्तन

बीकानेर (संवाद)।

टोंक भास्कर

एक दर्जन गांवों में चाइल्ड चैंपियन करेंगे बाल विवाह व बालश्रम के मामले उजागर

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . बारां . मंगलवार . 26.12.2017

जापान एम्बेसी व एनजीओ के बीच हुई साझेदारी

साझेदारी के मौके पर मौजूद प्रतिनिधि मंडल के सदस्य।

शाहाबाद. स्वयंसेवी संस्था सिकोइडिकोन ने कौशल विकास के लिए जापानी एम्बेसी से साझेदारी की है। इसके तहत युवाओं तथा आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को रोजगार उत्पन्न होंगे। संस्था के अनुसार जापान एम्बेसी के माध्यम से बारां जिले में महिलाओं व युवाओं के लिए कौशल विकास केंद्र की स्थापना के लिए स्वयंसेवी संस्था सिकोइडिकोन व जापान एम्बेसी के मध्य इस परियोजना पर 19 दिसम्बर, 2017 को नई दिल्ली में हस्ताक्षर किए गए थे। परियोजना का उद्देश्य कौशल विकास के विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से युवाओं व महिलाओं की आजीविका में सुधार लाना है। इस अवसर पर जापान के राजदूत केजी हिरामत्सु ने कहा कि इस परियोजना के माध्यम से परियोजना क्षेत्र के समुदाय के जीवन में सुधार होगा व भारत और जापान के मध्य साझीदारी के संबंध भी मजबूत होंगे। सिकोइडिकोन के सचिव शरद जोशी ने जापान एम्बेसी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

किसानों से किया संवाद

मालपुरा @ पत्रिका. सिकोईडिकोन द्वारा महेश सेवा सदन में वर्तमान परिदृश्य में कृषि क्षेत्र की चुनौतियों एवं आवश्यकताओं पर किसानों के साथ संवाद कार्यक्रम हुआ। इसमें शाखा प्रभारी विवेक त्रिपाठी ने कार्यक्रम के उद्देश्यों, जलवायु परिवर्तन के खेती पर पड़ने वाले प्रभावों, किसान उत्पादक संगठन की अवधारणा व आवश्यकताओं के बारे में जानकारी दी। कैलाश चन्द गुर्जर, एस. एल. गठाला, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एल. आर. गुर्जर ने जैविक खेती, फसल चक्र, मिश्रीत खेती, नकदी फसलों के बारे में जानकारी प्रदान की।

रायसेन एक्सप्रेस

वड़ोदा की एक नाबालिग परिवार की परवाह न कर घर से लापता हो गई

ब्लू व्हेल गेम से प्रभावित होकर गई गुमशुदा बालिका घर लौटी

शैक्षणिक, सीमित व निजी प्रसार हेतु प्रकाशित :-

सेन्टर फॉर कम्यूनिटी इकोनोमिक्स एण्ड डेवलपमेंट कन्सलटैंट्स सोसायटी

स्वराज परिसर, एफ-159-160, औद्योगिक व संस्थागत क्षेत्र
सीतापुरा, जयपुर-302022 (राज.)
फोन : 0141-2771488
फैक्स : 0141-2770330
ई-मेल : cecoedecon@gmail.com
वेबसाईट : www.ceocedecon.org.in

संरक्षक : शरद जोशी
संपादक : डॉ. आलोक व्यास
ग्राफिक्स : रामचन्द्र शर्मा व भँवरलाल जाट

BOOK POST